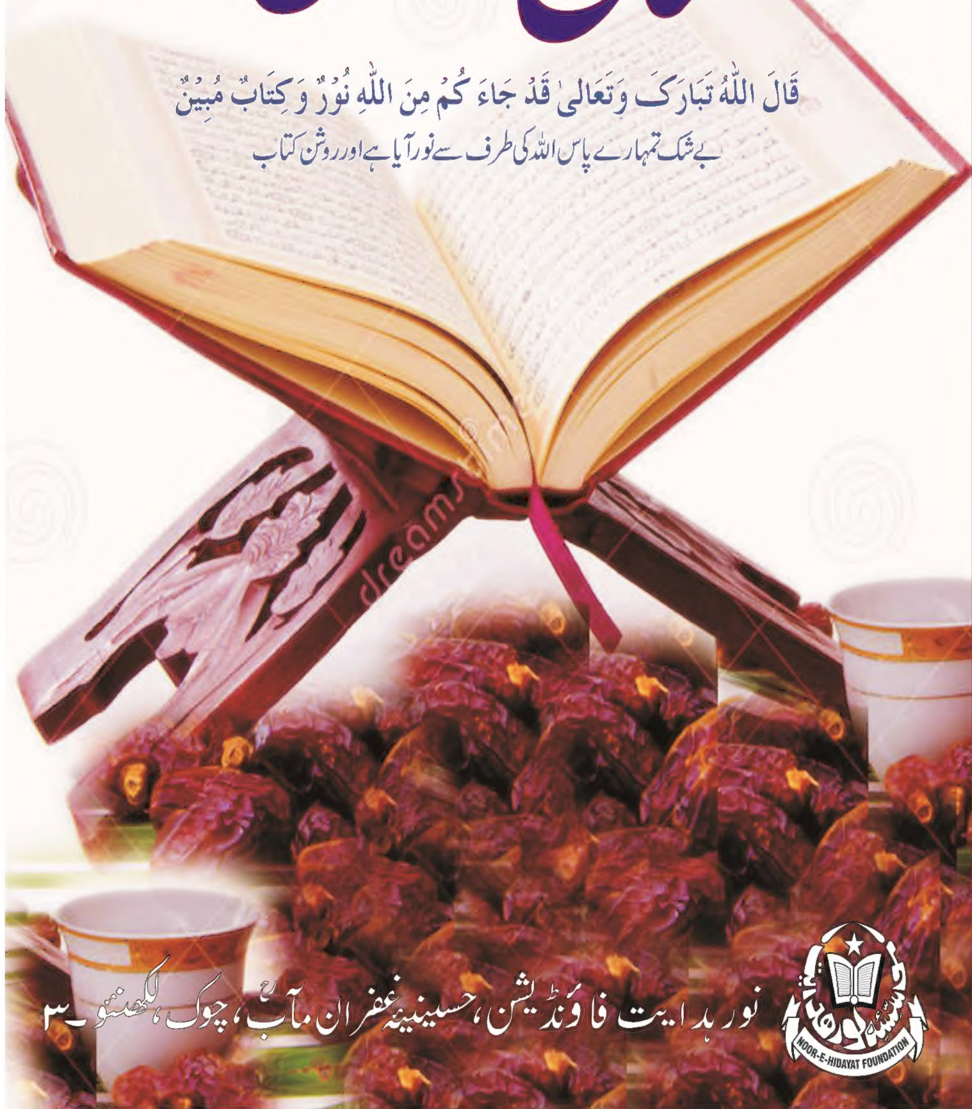




R.N.I.No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd. No.SSP/LW/NP-75/2014-16 Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month
Annual Rs. 200/- Per copy-Rs. 20/-

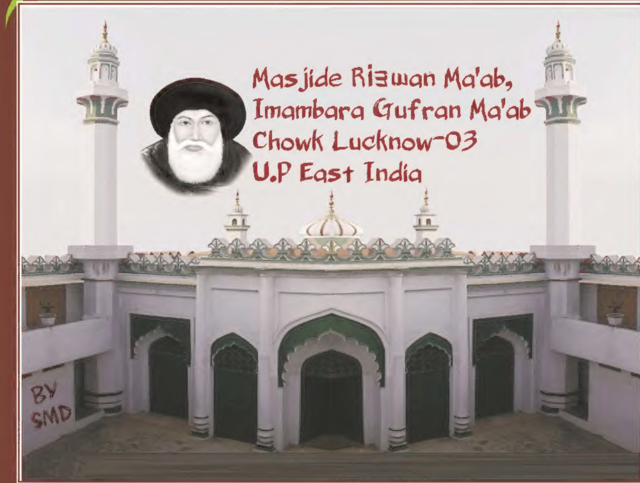
SHUA-E-AMAL

Lucknow

शुआ-ए-अमल

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ

JULY 2014





NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION
Imambara Ghufran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Ph.:0522-2252230

बिस्मेही तआला

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन की

इस्लामी, ज्ञान व शोध

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

जुलाई 2014

शुआ-ए-अमल

"लखनऊ"

वर्ष 11 — अंक 1

न्यास संस्थापन

15 जमादिलऊला 1424 हि० / 16 जुलाई 2003 ई०

पत्रिका विमोचन

15 जमादिलऊला 1425 हि० / जुलाई 2004 ई०

पर्यवेक्षक:

मु० र० आबिद, गोलागंज लखनऊ

संरक्षक

क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै. **कल्बे जवाद** नक़वी साहब

सम्पादक

सै. मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़' जायसी

उप-सम्पादक

क़ायम महदी नक़वी 'तज़हीब' नगरौरी

आसिफ़ अब्बास नौगांवी, अली अब्बास मुबारकपुरी

मिलने का पता

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक, लखनऊ - 3

Phone No: 0522-2252230 Mobile No: 09335276180 — 09335996808

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ-ए-अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ-3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै० मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़ जाएसी'।

Per Copy 20/- Annual 200/-

R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526



Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2008-10



WEBSITE:
www.noorehidayatfoundation.org
www.noorehidayatfoundation.com
www.naqeeblucknow.com

E_mail:
noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com

वार्षिक अंशदान

1- एक साल के लिए 200/-
2- पांच साल के लिए 800/-
3- लाईफ़ मिम्बरशिप 4000/-

fo'k; lwph

जुलाई 2014ई०

रमज़ानुलमुबारक 1435हि०

नं०	लेख व लेखक	पृष्ठ

ज़िन्दगी का सिस्टम

y§kd %आयतुल्लाहिल उज़मा सय्यदुल उलमा मौलाना सै0 अली नक़ी नक़वी
l Ei knu %नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

¼xfUe fdLr½

,d [kkl ckr

मेरे नज़दीक इन तमाम हादीसों में रोज़ा इफ्तार का मतलब ये है कि रोज़ा पूरा होने के बाद रोज़ेदार का इफ्तार कराया जाये। लेकिन हमारे मुस्तहब रोज़ों में जो पीछे पड़ा जाता है कि रोज़े पूरा न करके बीच ही में खोल दिया जाये और इसी को बड़े सवाब का काम समझा जाता है और इसके लिये बड़े कोशिशों से काम लिया जाता है। ख़ास तौर से ईदे मबअस (27रजब) के रोज़े में जिसे हज़ारी रोज़ा कहा जाता है, मेरे ख़्याल में ये रोज़ा इफ्तार के इस मतलब से अलग है और इस तरह के रोज़े को पूरा होने दीजिए और फिर इफ्तार के वक़्त इफ्तारी करा दीजिए। ये एक पान की गिलौरी और एक छुहारे और एक इलायची से किसी का ख़ून करने से क्या फ़ायदा?

इस क़िस्म के इफ्तार की ख़्वाहिश जिसे ''सवाले खुदा'' कहा जाता है, मेरे नज़दीक इसकी कोई अहमियत नहीं है। बेशक मोतबर हदीसे इस बारे में आया है कि अपने मोमिन भाई की ख़्वाहिश से रोज़े को खोल डालो तो वह इस रोज़े के पूरा करने से अफ़ज़ल है। मगर मेरे ख़्याल में इसका मतलब ये है कि वह मोमिन भाई वाक़ई आपको कुछ खाना खिलाना चाहता है और इसका दिल चाहता है कि इसके यहाँ खाना खायें, या कोई पसन्द की चीज़ जिसे वह मोहब्बत के साथ आपको खिलाना चाहता है, जो रोज़े की वजह से उसकी ख्वाहिश को पुरा करने से पीछे न हटिए, मगर ये पान की गिलौरी और इलायची और एक छुहारा जिसका मक़सद रोज़े को ख़त्म कराना है, हरगिज खाना खिलाने के मानी में नहीं आता है। हालांकि अगर हम रोज़े से न होते तो शायद ये मिलता भी न। रह गया मोमिन की ख़्वाहिश को पूरा करना तो वह मोमिन खुद कैसा है जो हमारी इस खाहिश और दिली चाहत को पुरा नहीं होने देता कि हम चाहते हैं कि अपने रोज़े को पूरा करें, वह बिला वजह हमें क्यों हमारी खाहिश के ख़ेलाफ़ मजबूर करता है। यहाँ एक बात और कहता चलूँ कि कुछ लोग मुस्तहब रोज़ा और ख़ास तौर से हज़ारी रोज़ा सिर्फ़ इस उम्मीद पर रखते हैं या कम से कम इस यक़ीन के साथ कि कोई न कोई खुलवायेगा और हम खोल डालेगें , ऐसे लोगों के रोज़े का सही होना बहुत मुश्किल है। मेरे नज़दीक इनका रोज़ा तो होता ही नहीं, क्योंकि रोज़ा एक ऐसा काम है जो शुरूआत और ख़ात्मा सुबह होने के कुछ पहले से शुरू होकर सूरज डूबने तक रहे। अगर आपका इरादा है इस पूरी मुद्दत (अवधि/Period) रोज़ा रखने का, तब तो रोज़ा है, और अगर ये नीयत ही नहीं तो रोज़ा नहीं और जब नियत के वक़्त ही ये ख़्याल है कि दो घण्टे का मामला है, फिर तो खुल ही जायगा, तो इसका मतलब यह है कि रोज़े की नीयत पैदा हुई ही नहीं। और अब अगर किसी ने रोज़े को खुलवाया तो वह खुलवाना न हुआ क्यों कि वह पहले से बंधा ही नहीं, या मतलब यह है कि न इससे रोज़ेदार को रोज़े का सवाब मिल सकता है और न खुलवाने वाले को इफ्तार कराने का सवाब। रोज़ा तो उस वक़्त होगा जब अपनी

नीयत व इरादा यही हो कि हम शाम तक रोज़ा रखेगें मगर इत्तेफ़ाक़ से कोई बुलाये और खाना खिलाने को आपके पीछे पड़ जाय तो उस वक़्त उसकी खाहिश पर रोज़ा खोल दे, चूँकि ऐसे में जबकि रोज़े की नीयत हो चुकी थी, इसलिए रोज़े का सवाब भी मिलेगा और फिर मोमिन के बुलावे को कुबूल करने का सवाब मिलेगा।

jkst sdk rjhdk-o dkuw

रोज़ा नफ़्स (जी/जान/रूह) को पाक करने के लिए है। इसलिए मासूम इमामों[अ०] ने ज़ोर दिया है कि रोज़े की हालत में इन्सान अपनी ज़बान व दिल, निगाह और जिस्म के हर हिस्से पर क़ाबू (Control) रखे और अपनी ज़िन्दगी जीने के तरीक़े और सामाजिक रहन सहन के क़ायदे में ऐसी पाबन्दी करे कि उसका रोज़ा अपनी रूहानी हैसियत का पूरी तरह आइना साबित हो सके। इसी से इमाम जाफ़र सादिक[अ०] ने फरमाया है ''जब तुम रोज़ा रखो तो तुम्हारे कान, आंख और जिस्म की खाल हर चीज़ रोज़ेदार हो''। मतलब ये है कि कान उन आवाज़ों से अलग रहे जिनका कान लगा कर सुनना शरीयत ने हराम किया है। निगाह उन चीज़ों को देखने से दूर रहे जिनको देखना मना किया गया है। जिस्म की खाल ऐसी चीजें छूने से दूर रहे जिनका छूना नाजायज़ है। इसी तरह और जिस्म के दूसरे हिस्से बन्धनों और सीमाओं से बन्धे रहें। आख़िर में आपने फ़रमाया '' यानी तुम्हारे रोज़े का दिन तुम्हारे बेरोज़े के दिन जैसा न हो, मतलब ये है कि तुम्हारी ज़िन्दगी के हर हिस्से पर रोज़े का असर उजागर होना चाहिये।

इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] की रवायत है कि जनाब रेसालत मआब[स०] ने जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी से मुख़ातिब होकर फ़रमाया'' ये रमज़ान का महिना है जो भी इसमें दिन को रोज़ा रखे और रात को नमाज़ें पढ़े और खुले व छुपे बदन के सारे हिस्सों को परहेज़गारी और पारसाई (तक़वा संयम ने की) से जुड़ा रखे तो इस महीने से बाहर निकलने की तरह वह गुनाहों से भी बाहर (दूर) हो जायेगा।''

जाबिर ने निवेदन किया ''ये इरशाद (सूक्ति) कितना उमदा (अच्छा) है।

हज़रत ने फ़रमाया ''ऐ जाबिर ये शर्ते भी तो कितनी कड़ी हैं।''

इमाम जाफ़र सादिक़ अ0 ने फ़रमाया '' रोज़े का असल मक़सद सिर्फ़ खाने पीने को छोड़ना नहीं है।''

''जब रोज़ा रखो तो अपनी ज़बानों को रोके रखो और निगाहों को अलग रखो (यानि बुरी चीज़ों को देखने से दूर रखो) और आपस में झगड़ा न करो, और आपस में एक दूसरे से ईर्ष्या, (ये आरजू कि जो चीज़ दूसरे के पास है मुझे भी मिल जाए) व हसद (जलन) न करो।

जनाब रेसालत माआब[स०] ने तो बड़े बलीग़ (कहने का उमदा दिल छूता तरीक़ा/Eloquent) अन्दाज़ से इस बात को बताया है कि ''रोज़ा कुबूल होने के लेहाज़ से इस सूरत में बेमानी हो जाता है कि जब काम पर देखरेख न बाक़ी रहे और इन्सान रोज़े की हालत का सम्मान एहतराम अपने अ़मल से न करें। हज़रत स0 ने एक औरत के बारे में सुना, मुमकिन है वह औरत आपकी बीबियों में से कोई भी हो, वह रोज़े की हालत में अपनी /कनीज़ दासी को गालियाँ दे रही थी। हज़रत ने खाना मंगवाकर फ़रमाया कि ये खाना खाओ, उस ने कहा मैं तो रोज़े से हूँ। आपने कहा : तुम कैसे रोज़े से हो कि अपनी कनीज़ को गालियाँ देती हो। याद रखो कि रोज़ा सिर्फ़ खाने–पीने को छोड़ने का नाम नहीं है।

इमाम जाफ़रे सादिक[अ०] ने फरमायाः ''जब रोज़ा रखो तो चाहिये कि कान और आंख हराम और बुरी बातों से बचे रहें और किसी से झगड़ा न करो और नौकर चाकर को तकलीफ़ न पहुँचाओ और चाहिये कि रोज़ेदार की शान तुम पर उजागर हो और रोज़े के दिन को अपने बेरोज़े के दिन के बराबर न रखो। नौकर चाकर के साथ सख़्ती न

करने का हुक्म, इसके अलावा भी दूसरी रवायत में इन लफ़्ज़ो में दिया गया है " अपने नौकर के साथ नर्मी करो।"

यह सबक़ दिया गया है जिसके बजाए कुछ रोज़ेदारों का यह तरीक़ा बन गया है कि वह रोज़े की हालत में "मीरे ग़ज़ब" (गुस्सैल) बने रहते है और बात बात में नौकर की जान को आ जाते हैं जैसे वह इसी को अपने रोज़े का इज़्हार समझते हैं कि इन्हे हर बात पर गुस्सा आये, हालांकि रोज़े में तो ये हुक्म दिया गया है कि अगर गुस्से की बात हो भी तो टाल दी जाये। यहाँ तक कहा गया है कि अगर तुम्हें कोई गालियाँ भी दे तो तब भी अपने रोज़े की ख़ातिर उसे जवाब न दो।

दूसरी बात ये है कि जिसमें आम दिनों के अलावा रोज़े की हालत में कुछ लोगों के यहॉ कुछ बातें और बढ़ जाती हैं, जैसे दूसरों की बुराई, और उनकी कमियाँ का बयान करना, हमारा वक़्त ही नहीं कटता जब तक कि दूसरों की बुराई और उनके खोट का बयान न हो, और हमारा वक़्त ही नहीं कटता जब तक कि दूसरों की मीन मेख न निकालें और उनकी बुराइयों का ज़िक्र न हो। इसको पिछली हदीसों में ख़ास तौर पर मना किया गया है।

बेशक रोज़े की रस्म/रीति से (Formally) सही होने के लिये उन (चीज़ों का) को छोड़ देना भी जैसे खाना पीना वगैरह काफ़ी है। इस लेहाज़ से कि बाद में इस रोज़े की क़ज़ा की ज़रूरत नहीं, मगर अ़मल का कुबूल होना उसके अस्ली फ़ायदे के लेहाज़ से होता है। आख़िरत के सवाब काम के कुबूल होने के दर्जे से ज़्यादा जुड़ा है। रोज़े का असली मक़सद जो खुदा की ख़ुशी की वजह है वह उस वक़्त मिलेगा जब रोज़े में इन्सान फ़र्ज़ का एहसास बाक़ी रखे और अपने अ़मल की देखरेख जारी रखे।

इन लोगों की तवज्जो दिलाने के लिये जो रोज़ा में गुस्सा दिखाने को अपना खास रंग ढ़ंग समझते हैं उनके लिए कुछ और हदीसें दी जा रही हैं जिनसे रोज़े में गुस्से को रोकने की फ़ज़ीलत ज़ाहिर होगी।

फ़ुज़ैल बिन बिसयार की रवायत– इमाम जाफ़र सादिक[अ०] से है कि रोज़े की हालत में आदमी किसी से झगड़ा न करें और न गुस्से से काम ले, न जल्दी हल्फ़ उठाये (क़सम खाने के लिए कुरआन उठाना) और न क़समें खाये।" अगर कोई इसके मुक़ाबले में अनजानपन से काम भी ले तो ये सह ले।

दूसरी हदीस सअदत बिन सदक़ह की है कि इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] ने अपने महान बाप दादा के ज़रिये से हज़रत रसूल[स०] से रवायत की है कि हज़रत[स०] ने फ़रमाया" जिस रोज़ेदार ख़ुदा के बन्दे को गालियाँ दी जायें और वह ये कहे कि ख़ुदा तेरा भला करे, मैं तुझे इस तरह गालियाँ नहीं दूंगा जिस तरह तुने मुझे गालियॉ दी हैं, तो खुदा फ़रमाता है कि मेरे बन्दे ने रोज़े की पनाह अपनायी मेरे दूसरे बन्दे की शरारत के बदले में, अब मैं इसको जहन्नम की आग से पनाह दूँगा।" इसी तरह की रवायत इस्माइल बिन मुसलिम कूफ़ी की भी इमाम ज़ाफर सादिक़[अ०] से है, इसमें ये है कि जब उसे गालियाँ दी जाती हैं तो वह कहता है कि मैं रोज़े से हूँ। ख़ुदा तेरा भला करे तो ख़ुदा फ़रमाता है कि उसने रोज़े की पनाह ली, उसको पनाह दे दी जाये और इसे जन्नत में दाख़िल किया जाये। काश! जान और जी बढ़ाने वाली इस ख़ुशख़बरी को सुनकर रोज़ेदार अपने गुस्से की आग को बुझा दें और जन्नत के बाग़ों के हक़दार बनें।

'ksj i<uk@dkQ;ikB

कई रवायतों से साबित होता है कि रोज़े की हालत में शेर पढ़ना मकरूह (अच्छा नहीं/करे तो सवाब नहीं, न करे तो सवाब) है। इस मौक़े पर ये ख़्याल किया जा सकता था कि शेर का मतलब उस शेर के विषय यानी ख़याली (काल्पनिक) होने से हैं चाहे नज़्म (Poetry) में

हो या नस्र (Prose) में लेकिन अगर कविता में कुछ हक़ीक़ी मतलब और सच्ची बातें दर्ज हो तो वह इस हुक्म से अलग समझा जाए। मगर हदीस ने इस ख़्याल की गुन्जाइश बाक़ी नहीं रखी है। वहां साफ़ बयान कर दिया गया है कि अगर कविता में सच्चे मतलब सही बातें भी हो, यहाँ तक की अहलेबैत[अ०] की मद्ह (तारीफ़) में हो तब भी इस का पढ़ना रोज़े की हालत में मकरूह है, और ये भी बयान किया गया है कि रात और दिन इस हुक्म में बराबर है। इसका नतीजा ये है कि रमज़ान महीने में रात को भी शेर पढ़ना मकरूह है। बल्कि रात को तो आम तौर पर शेर पढ़ना मकरूह है, चाहे रमज़ान महीना न भी हो। देखिए, नीचे दी गयी हदीसें:–

'हम्माद बिन उस्मान' की रवायत है कि इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] ने फ़रमाया:– रोज़ेदार के लिये शेर पढ़ना मकरूह है और उस शख़्स के लिए जो एहराम की हालत में हो और हरम में हो और जुमे के दिन शेर पढ़ना और रात में शेर पढ़ना। रावी (रवायत बयान करने वाले) ने कहा चाहे वह हक़ सत्य शेर ही क्यों न हो? हज़रत[अ०] ने इरशाद फ़रमाया'' अगर हक़ शेर ही हो।''

दूसरी रवायत हम्माद बिन उस्मान वग़ैरह की है कि इमाम जाफ़र सादिक़ ने फ़रमाया कि शेर रात को नहीं पढ़ा जाना चाहिए और रमज़ान महीने में रात दिन किसी वक़्त न पढ़ा जाये। हज़रत[अ०] के बेटे इस्माईल ने अर्ज़ किया, बाबा चाहे वह शेर हमारे बारे में हो ?

हज़रत ने फ़रमाया ''हाँ, चाहे वह हमारे बारे में हो।''

इन रवायतों के लेहाज़ से नौहा, मरसिया, सलाम, क़सीदा और किसी तरह के भी शेर की छूट साबित नहीं होती । ये दूसरी बात है कि अहलेबैत[अ०] की मदह (तारीफ़) का एक मुस्तक़िल सवाब इस ज़रिये से हासिल हो जाये और वह उस सवाब की कमी की पुरौती कर सके जो रोज़े में शेर पढ़ने को मकरूह होने से पैदा होती है।

,d fnypLi ppkZ

सबके देखने में आता है कि रमज़ान के बाद ईद का चांद कभी 29 को होता है और कभी 30 का जिस तरह और दूसरे महीने इस लेहाज़ से अलग होते है। और इस लेहाज़ से किसी चाँद के महीने के बारे में यह नहीं कहा जा सकता है कि वह हमेशा 29 ही का होता है या हमेशा 30 दिन का। उसी तरह रमज़ान महीने के बारे में भी कुछ तय (निश्चित) नहीं हो सकता। मगर कई हदीसें इस बारे में आ गयी हैं कि रमज़ान का महीना कभी 30 दिन से कम नहीं होता। कुछ रवायतों में बहुत सख़्त लफ़्ज़ों में इस चीज़ का इनकार किया गया है कि पैग़म्बर[स०] ने कभी 29 दिन के भी रोज़े रखे बल्कि कहा गया है कि रसूल[स०] ने हमेशा 30 ही दिन के रोज़े रखे। कुछ रवायतों में है कि जब से आसमान पैदा किया गया उस वक़्त से रमज़ान का महीना हमेशा पूरा ही हुआ। यानि कभी 30 दिन से कम न हुआ है, न होगा। इन हदीसों का नतीजा ये है कि रमज़ान के महीने के ख़त्म होने के लिये चांद का देखना कोई चीज़ नहीं है बल्कि अस्ल चीज़ 30 दिन का पूरा करना है। इसके ख़ेलाफ़ अनगिनत हदीसों में ये है कि रमज़ान का महीना भी दूसरे महीनों की तरह है। जैसे वह कभी 29 दिन का होता है कभी 30 दिन का। इसी तरह रमज़ान का महीना भी 29 और 30 दिनों का दोनों तरह का होता है और इसलिये चाँद का लेहाज़ किया जाएगा, चाहे चाँद 29 ही को निकल आया तो रोज़ा छोड़ देना ज़रूरी होगा। इन हदीसों में ये भी है कि रसूलअल्लाह सल्लललाहो अलैहे वसल्लम ने दोनों तरह से रोज़े रखे हैं 29 के भी और 30 के भी।

इन हदीसों के फ़र्क़ की वजह से पहले ज़माने के उलेमा में बड़ा ज़बरदस्त मतभेद (राय में अलगाव) पैदा हो गया। एक वर्ग पहली हदीस पर चला और उन्होने हर महीने के लिये दिनों की

¼'ksk i'Bs uEcj 12 ij ——½

कुरआने हकीम के सात अचम्भे

ekSykuk lgS vlQwh lgc fdcyk

कुरआन हकीम के जो अचम्भे अर्थात विचित्रतायें (अजाएब) अब तक प्रकट हो चुके हैं या आने वाले समय में जाहिर होंगे, उनकी गिनती का अनुमान लगाना सम्भव नहीं है। इस ग्रन्थ के बारे में हमारे छठे इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ०) का यह इरशाद अपने आप में एक चमत्कार की हैसियत रखता है कि–

''इसके अचम्भे और अजाएब कभी समाप्त न होंगे।'' पिछली चौदह सदियों में मानव ज्ञान की प्रगति और सृष्टि के भेदों के अनावरण ने कुरआन की आयतों में सैकड़ों छुपे हुए अचम्भों (अज़ाएब) को जाहिर कर दिया है और यह सिलसिला आगे भी चलता ही रहेगा और खुद इस हकीम किताब में यह भविष्यवाणी मौजूद है–

''हम इंसानों को उनकी जानों और अन्य सृष्टि में अपनी निशानियां दिखाते रहेंगे। यहां तक कि इस किताब की सत्यता उन पर प्रकट हो जायेगी।(1)

पिछले 1400 वर्षों में इस इलाही इर्शाद की अर्थपूर्णता और सत्यता उज्जवल से उज्जवल होती रही है और कुरआन के अब तक के जाने माने अनगिनत ''अचम्भों से हम चुनाव की कोशिश बिना, बस 7 अचम्भे सम्मानित पाठकों की भेंट कर रहे हैं। इन अजाएब को कुरआन–ए–हकीम के ईश्वरीय वाक् (इलाही कलाम) होने की बौद्धिक तर्क भी माना जा सकता है।

1&cá kMds QSlo dhfujUrjrk%

यह तथ्य अब प्रमाणित हो चुका है कि यह ब्रह्माण्ड अपने सकल स्वरूप में लगातार फैल रहा है और अनन्त भविष्य काल तक फैलता रहेगा। आज से 50 साल पहले तक इंसान सृष्टि सम्बन्धी इस तथ्य से अनभिज्ञ था और नक्षत्रों की ज़ाहिर गति से अलग ब्रह्माण्ड के सकल आयतन (हजम) को ठहरा हुआ और स्थायी समझता था परन्तु अब विज्ञान के छात्र ब्रह्माण्ड में फैलाव और वृद्धि की वास्तविकता से अवगत हो चुके हैं। देखने में यह ब्रह्माण्ड हमें फैलता हुआ नज़र नहीं आता लेकिन इस ज्ञान क्षेत्र के विद्वानों ने इस फैलाव की दशा की भी व्याख्या कर दी है और फैलाव की गति का भी लेखा जोखा कर लिया है। आलों उपकरणों, प्रेक्षण और मुशाहदे और उच्च गणित शास्त्र की रोशनी में इस फैलाव को जैसे अपनी आंखों से देख लिया है और अब यह फैलाव मात्र वैज्ञानिक दृष्टिकोण नहीं, महज़ एक साइंसी नज़रिया नहीं, बल्कि ऐसा ठोस यथार्थ है जिसे ज्ञान का भविष्य कभी रद नहीं कर सकता, कभी मेट नहीं सकता। अब निवेदन का सार मस्तिष्क में सुरक्षित रखें और जो इस आयत में कहा गया है उस पर ध्यान दें–

''इस वातावरण को हमने अपने अधिकार के हाथों से रचा है और हम ही इसको फैलाते रहे हैं। (2) इस चकित कर देने वाली आयत के भाषा कौशल और उसकी सार्थकता और सच्चाई सूरज से भी ज़्यादा दीप्तमान है। आज से 1400 साल पहले सृष्टि लोक का जो मुहबंद राज़ महान से महान विज्ञानी और बुद्धजीवी को जिसकी शंका

भी न हुई होगी वह कुरआन की एक आयत में साफ और खुले शब्दों से सृष्टा ने बयान कर दिया है। बुद्धि और न्याय वालों के लिये यह एक अकेली आयत कुरआन के दैवी वाक् होने का अकाट्य प्रमाण है।

2&iljfEHkd xfr %

सृष्टि लोक के उपरोक्त और उसकी कैफ़ियत और चाल के दृष्टिगत मानव बुद्धि इस निष्कर्ष पर पहुंची कि यह समस्त द्रव्य जो करोड़ो सूरतों और स्थितियों में सृष्टि लोक में फैला नजर आता है और जिससे यह पुरा ब्रह्माण्ड समझ में आता है आज से अरबों शताब्दियों पहले एक ठोस जमे हुए पिण्ड की सूरत में इकट्ठा था। मतलब यह कि यह समूचा सौर मण्डल गतिमान और स्थिर नक्षत्र टूट्ने वाले तारे, पुच्छल तारे, आकाश गंगायें, अन्तरिक्ष और उसकी फैली हुई सान्सारिक धूल आज से करोड़ो शताब्दी पहले एक महान गेंद की सूरत में, एक महान पिण्ड की अवस्था में जमी हुई थी। कब से यह भयावह पिण्ड मौजूद था? कोई नहीं जानता प्रन्तु इतना अवश्य ज्ञात है कि खुदा जाने आज से कितने करोड़ साल पहले इस महान और भयावह पिण्ड में पहली गति पैदा हुयी और यह पिण्ड एक रहस्यमय धमाके के अन्तर्गत दरार पड़के फैलने लगा और उपरोक्त फैलाव इस धमााके का एक फल है। और सृष्टि लोक के सभी विधि विधान इसी सर्वप्रथम गति के कारण प्रचलित है। प्रथम गति हुई, धमाका हुआ, इसमें कोई संदेह नहीं। लेकिन गति क्यों हुई? इसका कारण, बताने से शोधकारी असमर्थ हैं और इस गुत्थी को सुलझाने के लिये कोई दृष्टिकोण भी पेश करने का साहस नहीं किया है। खुली बात है कि यह तथ्य आज से 100 साल पहले अज्ञात था।

अतः आज से 1400 साल पहले इस तथ्य तक किसी मनुष्य के ज्ञान की पहुंच का प्रश्न ही नहीं उठता और अब ज़रा अपने मस्तिष्क महान को इस आयत की ओर आकृष्ट करें।

''क्या (ज़ात–ए–हक, ब्रह्म) का इन्कार करने वालों ने यह नहीं देखा कि ज़मीन आसमान एक दूसरे से जुड़े थे, मज़बूत तरीके से जमे हुए थे, इकट्ठा थे और हमने उन्हें फाड़ दिया।''(3)

आम तौर पर विज्ञानियों का मन मस्तिष्क, अज्ञानता के मोह, मूर्खता, संकुचित दृष्टि और प्रत्येक प्रकार के पक्षपात से शुद्ध होता है। अतः इस आयत का चमत्कार देखने के बाद उनके चिन्तन को अल्लाह पाक के सजदे में गिर जाना चाहिए लेकिन हमें तो अभी बहुत कुछ कहना है। आइये कि अब ''ईश्वरीय अन्दाज़ का एक और चमत्कार'' देखें।

3&rRoledkvkil hl aqyu vkSj vuikr%

सृष्टि लोक में जो तत्व पाये जाते हैं और जिनके कर्मी करण और योग से ही यह सृष्टि लोक समझ में आता है उनकी गिनती सीमित है लेकिन इनसे बनने वाले यौगिकों की गिन्ती का घेर लेना और कुछ छूटने न देना सम्भव नहीं। सृष्टि लोक में प्रत्येक तत्व की सकल मात्रा अलग–अलग है। उदाहरण स्वरूप देखें–हाईड्रोजन सब से अधिक मात्रा में पायी जाती है और रेडियम, यूरेनियम आदि सबसे कम मात्रा में ओर यह आपसी अनुपात इतना युक्तिपूर्ण और सूक्ष्म है कि इस अनुपात व्यवस्था में जरा सी भी गड़बड़ी सृष्टि लोक को निलम्बित और जीवन को लुप्त कर सकती है। अगर वायुमण्डल में आक्सीजन की मात्रा अपने अनुपात से घट या बढ़ जाये तो जीवन समाप्त हो जाये। भूमण्डल में सोने की जो मात्रा है उसमें घटती बढ़ती संसार की आर्थिक व्यवस्था को मुद्दतों के लिए छिन्न–भिन्न कर सकती है। इस ढ़ंग की सैकड़ों नहीं, हज़ारों नहीं, करोड़ो मिसालें दी जा सकती हैं। इन सच्चाईयों को कोई भी बुद्धिमान और न्याय प्रिय आदमी संयोगों का संग्रह नहीं मान सकता। गणित विज्ञान के दक्ष विद्वान इस बात की पुष्टि करेंगे कि संभावना और धारणा के नियम के अन्तर्गत यह संयोगो का सिलसिला

बौद्ध रूप से असम्भव है और वास्तविकता भी यही है कि यह सब यथार्थ संयोग वश नहीं है बल्कि किसी शक्ति के अन्दाजें हैं और वह शक्ति इसकी घोषणा भी कर चुकी है।

''कोई चीज़ ऐसी नहीं जिसके भण्डार हमारे नहीं। यानी कोई चीज़ ऐसी नहीं है जिसकी हमारे पास कोई कमी हो। लेकिन हम उसे एक अन्दाजे के अनुसार ही उतारते हैं जो हमारे ज्ञान में है।''(4)

वैसे तो कुरआन में 14 आयतों पर ही सजदा करने का आदेश है और उनमें से भी बस चार पर सजदा वाजिब है लेकिन सच तो यह है कि हर विचारशील और चेतन व्यक्ति प्रत्येक आयत पर सजदा कर सकता है। यह आयत भी उन्हीं आयतों में से है कि अगरचे परिभाषिक रूप से सिजदे वाली आयतों में नहीं है लेकिन मन पुकारता है कि सृष्टि के सिजदे में गिर जाओ जिसकी सम्पूर्ण शक्ति ने इस अनुपात और संतुलन को बनाये रखा है। मैं नहीं समझता कि अब यहां किसी और टीका टिप्पणी की गुंजाइश है और अगर यह आयतें चमत्कार नहीं हैं तो फिर चमत्कार कहते किसे हैं?

4&l ls5 e.My dk_ tqj§lk ¼ebrdhe [kt½eal Qj%

हमारा सौर मण्डल अर्थात सूरज चाँद नवज्ञात गतिमान नक्षत्र और उनके अन्तर्गत और छोटे गतिमान ग्रहों का जमघट सामूहिक रूप में एक स्थित नक्षत्र की ऋजु रेखा में बढ़ रहा है। हमारे इस व्यवस्था का केन्द्र सूरज है जमीन और आठ ग्रह सूरज के गिर्द घूम रहे हैं और ग्रहों के गिर्द उनके अधीनस्थ उपग्रह चक्कर काट रहे हैं और सूरज अपने मण्डल के सभी घटकों को किसी गतिमान दशा में लिये हुए एक ऋजु रेखा में एक तारे की ओर बढ़ता चला जा रहा है। यह नक्षत्र सितारों के इसी झुरमुट में स्थिर है जिसे खगोलशस्त्रियों ने स्पेस का नाम दिया है।

सूरज और सौर मण्डल के घटकों की इस प्रगति की गति सीमा भी मालूम कर ली गयी है लेकिन यह कोई घबराने की बात नहीं है क्योंकि अभी लाखों साल तक सूरज के सितारे से टकरा जाने की, संभावना नहीं है। अतः यह सिद्ध है कि सूरज एक स्थिर नक्षत्र की ओर अपने अधीनस्थों को लिये चला जा रहा है। सूरज की इस गति की जानकारी को ''कोपरनिक्स'' को भी नहीं थी जिसने 15वीं सदी में मसीही में (बतली मूसी) व्यवस्था को ग़लत विद्ध किया। ''बतली मूस'' ने कहा था कि जमीन स्थिर है चांद सूरज उसके गिर्द घूम रहे हैं (''कोपरनिक्स'' ने कहा) और ठीक कहा बतलीमूस की सोच में चूक हो गयी है। सूरज केन्द्र में है जमीन उसके गिर्द घूम रही है परन्तु सौरमण्डल के ऋजु रेखा में यात्रा करने का हाल उस पर भी न खुल सका था। चकितकारी बात यह है कि कुरआन में इस सत्य की निशान्दही करने वाली एक स्पष्ट आयत मौजूद है। परन्तु कुरआंन के भाष्यकारों का मस्तिष्क इस आयत में बताये गये ब्रह्माण्ड भेद तक न पहुंच सका और अगर कोई इंसान विधाता के इस मर्म का चौदह सौ वर्ष पहले अनावरण कर चुका हो तो क्या आप की बुद्धि उससे साधरण लोगों में शामिल रखेगी। और क्या आप यह मानने पर विवश नहीं हो जायेंगे कि यह साधरण व्यक्ति नहीं बल्कि विधाता का भेजा हुआ पैग़म्बर है? और मज़े की बात यह है कि यह हैरत अंगेज़ आयत उस बहुत पढ़े जाने वाले सूरे में है जिसे कुरआन न पढ़ने वाले भी बरकत के लिये पढ़ लेते हैं यानी सूरा यासीन जा कुरआने हकीम का 36 वां सूरा है, उसकी 38वें नम्बर वाली आयत में मालिक कहता है–

''और सूरज अपने ठहरने के स्थान की ओर चला जा रहा है। यह उस शक्ति सम्पन्न की बनाई व्यवस्था है जो बड़ा जानने वाला है।''

अब जी चाहता है कि बस इतना कह के आगे बढ़ जाया जाये कि कुरआने हकीम के ईश्वरीय वाक होने पर शक करने वालो। तुम

अपने पालने वाले की किन–किन निशानियों से विमुख रहोगे!

5&gealjf{kr j[kus okyh fn'kk%

जमीन पर रोज़ाना लगभग दो करोड़ टूटे हुए तारे गिरते हैं लेकिन हमें उनके जमीन से टकराने की सूचना नहीं होती। इन टूटे हुए तारों का आयतन (हजम) एक क्रिकेट गेंद से लेकर छोटी पहाड़ियों तक होता है फिर भी हम उनकी ज़द से बचे रहते हैं। इसका कारण यह है कि जब आन्तरिक्ष से यह ग्रह ज़मीन की ओर बढ़ते हैं तो वायुमण्डल में प्रवेश करते ही इनमें वायुमण्डल की रगड़ के कारण आग लग जाती है और इसी नाते भूमि पर आते–आते रेज़ा–रेज़ा हो जाते हैं। यानी हवा का आवरण जो जमीन के इर्द गिर्द लिपटा हुआ है, हमें इन देवकाय आलों की जानलेवा मार से बचा लेता है। ज़रा सोचिये कि अगर यह वायुमण्डल न होता और इसमें पत्थरों को रेज़ा–रेज़ा कर देने की शक्ति न होती तो क्या मैं यह लिख सकता था और आप इसे इस समय पढ़ते होते! जी नहीं। जीवन कभी का समाप्त हो चुका होता और इंसानों, हैवानों और रेगिस्तानों के बजाये भूमण्डल पर सिर्फ पत्थरिस्तान होते। इसके अलावा इस वायुमण्डल के चारों ओर एक गैस का खोल है जिसे ओजोन, (प्रजारक) कहते हैं। इसका एक अणु ऑक्सीजन के तीन प्रमाणुओं का योग होता है। इस गैस में एक क्षमता यह है कि सूरज से निरन्तर निकलने वाली घातक किरणों को जिन्हें काएनाती शुआएं कहा जाता है। अपनी तहों में शोषित (जज़्ब) कर लेती है और जमीन तक नहीं पहुंचने देती। यह घातक किरणें जीवन में रूकावट और समाप्त कर देने वाली है अर्थात जीवन के लिये घातक और बाधक हैं। अगर वायुमण्डल के इर्द गिर्द यह ओजोन गैस का ग़िलाफ न होता तो यह मुहलिक काएनाती शुआंए ज़मीन तक पहुंचती और जीवन बना रहना असम्भव हो जाता यानी अभी तक हमें वायुमण्डल के दो उपकारों का ज्ञान हुआ है। हम यहां सांस लेने के फायदे को नहीं गिन रहे हैं। एक उपकार यह है कि हम को शहाबे साक़िब, (टूटे हुए तारों) की मार से बचा लेता है और दूसरा एहसान यह है कि हमें काएनाती शुआओं से सुरक्षित रखता है। आज से 1400 वर्ष पूर्व वायुमण्डल या वातावरण के इन उपकारों और फायदों का ज्ञान तो क्या गुमान तक न हुआ था, सरसरी विचार भी नहीं आया था और हमें यह जानकारी न थी कि यह वातावरण हमारी रक्षा करने वाली दिशा है। यद्यपि हमें विधाता ने यह भेद बता दिया था लेकिन हम कुरआन में चिन्तन, मनन के बजाये,'' बह्रे जुलमात (अटलांटिक महासागर) में घोड़े दौड़ा रहे थे। अफ्रीका के सहरओं और यूरोप के कलीसाओं में अज़ानें दे रहे थे। कुरआन के यह अचम्भे सामने आते तो कैसे। ख़ैर इस आयत की गहराई और मज़बूत पकड़ की ओर ध्यान जाता तो कैसे? जिसका अनुवाद निम्न हैः–

''और हमने वातावरण को सुरक्षित दिशा बनाया है और यह ज़ाते हक़ (ब्रह्म) के न मानने वाले इस दशा की विचित्रताओं से मुंह मोड़ लेते हैं।''

और इहतियातन हम यह भी कहते चलें कि इस सुरक्षित दिशा के दो ही फ़ायदो का अभी तक ज्ञान हुआ है और आने वाले समय में जब मानव ज्ञान और प्रगति करेगा तो और कितने फ़ायदे सामने आयेंगे। इसे विधाता ही की बलंद और पाक ज़ात अच्छा और बेहतर जानती है। (5)

6&gj plt +eat ksM+s ik;s tkrs gSa%

पहले आदमी यह समझता था कि जोड़ों यानी पुल्लिंग और स्त्रीलिंग का अस्तित्व इन्सानों और हैवानों तक सीमित है लेकिन कुछ दिन बाद इंसान के ज्ञान और अनुभव ने बताया कि पेड़ पौधों और सभी वनस्पतियों में भी जोड़ों का अस्तित्व है और यही अस्तित्व उनके जीवन का कारण है। विज्ञान ने प्रगति की तो पता चला कि यह सिलसिला इंसान, हैवान और वनस्पति तक ही सीमित नहीं बल्कि

बिद्युत शक्ति में मुस्बत और मन्फी (धनात्मक और ऋणात्मक) का जोड़ा मौजूद है। चुम्बक में उत्तर ध्रुव के रूप में जोड़े विद्यमान हैं और प्रमाणु भी इलेक्ट्रान (ऋणात्मक ऊर्जा) और प्रोटान (धनात्मक ऊर्जा) पर सम्मिलित है और चूंकि सृष्टि लोक का सारा द्रव्य परमाणुओं से ही अभिप्राय है और तमाम परमाणुओं में जोड़े पाये जाते हैं, अतः हम खण्डन के डर के बिना यह कह सकते हैं कि जोड़ों का वजूद हर चीज़ में पाया जाता है और यही अल्लाह भी फरमाता है–

''पवित्र और पुनीत है वह ज़ात जिसने जमीन से उगने वाली सभी चीजों का और खुद इस (इंसानों) का जोड़ा पैदा किया और उन चीजों का भी जिनकी इन्हें ख़बर नहीं।(6)

मनन और चिन्तन करने वाले इस आयत के अर्थ वाकपटुता, गहराई, व्यापकता सार्थकता पर विचार और इस किताब को मात्र विश्वास की दृष्टि से नहीं बौद्धिक रूप से भी अल्लाह पाक का वाक् मान लें। उपरोक्त आयत के अन्तिम अंश की ओर मैं फिर आपका ध्यान आकृष्ट करूंगा। इसका अर्थ यह है कि ''हमने उन चीज़ों के जोड़े पैदा किये जिनकी तुम्हें ख़बर नहीं आज से चौदह सौ साल पहले हमें ऊर्जा की धनात्मक और ऋणात्मक, और चुम्बक के उत्तर ओर दक्षिण ध्रुव और प्रमाणु के इलेक्ट्रान और प्रोटान की ख़बर नहीं थी और आज चौदह सौ वर्ष गुज़रने पर भी आयत के इस अंश की सच्चाई और वास्तविक्ता पर कोई असर नहीं पड़ा क्योंकि आज तक हम सब चीज़ों को जो सृष्टिलोक में पायी जाती है, घेर नहीं पाये हैं और खुदा ही अच्छा जानता है किन–किन चीज़ों के उसने जोड़े पैदा किये हैं और आज के हज़ारों वर्ष बाद भी जोड़ियों के बारे में आदमी का ज्ञान पूर्णता को प्राप्त न होगा और आयत के अन्तिम शब्द ''जिनकी उन्हें ख़बर नहीं'' ज्यों के त्यों अपना जलवा दिखाते रहेंगे।

7&fQj+vkSu ds'kjh dh lqj{kk%

जातियों के इतिहास में मिस्र का आदि इतिहास सबसे अधिक दिलचस्प और आश्चर्यजनक है। मिस्र पर फ़िरऔनों के लगभग तीस परिवारों की सत्ता रही है। मिस्र के आदि इतिहास के ज्ञानियों ने आदि मिस्री लिखावट की जो प्रतीकों और तस्वीरों का मिश्रण है, पहेली सुझाा कर मिस्र के आदि इतिहास को संकलित किया है और कई विवरणों के बारे में इन ज्ञानियों ने भेद किया है। कुछ कहते हैं कि वह ''फिरऔन'' जो हज़रत मूसा (अ०) के सामने आया था उसका नाम मेनफताह था और कुछ का विचार था कि वह 18वीं नस्ल का फिरऔन था जिसका नाम ''राअ् मसीस (द्वित्तीय)'' था। बहरहाल हमें इससे मतलब नहीं कि उसका नाम क्या था। हमें तो आप का ध्यान इस ओर आकृष्ट करना है कि आज से कुछ सदी पूर्व किसी इतिहासकार ने यह सोचा तक न होगा कि फ़िरऔनो और मिस्र के दूसरे सामन्तों की लाशें शवलेपन (हुनूत) करके अहराम (समाधिस्तूप) में सुरक्षित कर दी जाती थी। इन्हें ममी का नाम दिया गया है। जब मिस्र के पुराने इतिहास के अनुसंधान के सिलसिले में खुदाई का कार्य बड़े पैमाने पर मुद्दतों तक जारी रहा तो पता चला कि कितने ही फ़िरऔनो और सामन्तों की लाशें आज तक सुरक्षित हैं। यह लाशें हज़ारों वर्ष पुराने मकबरों में से निकाल कर अजायबघरों की शोभा बना दी गयीं। कितनी ही लाशें निकाली जा चुकी है और कितनी ही उन डरावनी और भेदपूर्ण उलझी हुई भूलभुलैया जैसी क़ब्रगाहों में अब भी छिपी हुई है और उस ''फिरऔन'' की लाश काहिरा के म्युज़ियम में मौजूद है, जिसकी चर्चा हज़रत मूसा के सिलसिले में कुरआन में आयी है और इंसानों के लिए सीख का साधन बनी हुयी है। मिस्र के इतिहास की इन सच्चाइयों का ज्ञान आज से कुछ शताब्दी पहले किसी को न था परन्तु कुरआन आज से 1400 साल पहले इस यथार्थ की ओर साफ

संकेत कर चुका था। सूरे यूनुस कुरआने हकीम का दसवां सूरा है (इसकी 90,91,92 वीं आयतें पढ़ें) हज़रत मूसा (अ०) और फ़िरऔन से सम्बन्धित घटनायें बयान की जा रही हैं। जब फ़िरऔन डूबने लगता है और देखता है कि पानी सर से ऊपर ऊंचा हो रहा है तो ईमान लाने की स्पष्ट शब्दों में घोषणा करता है। कोई अन्य उपाय न होने और विवशतापूर्वक ईमान लाने की घोषणा के जवाब में इरशाद होता है—"अब (मौत को सामने देख के) ईमान ला रहा है। हाँलांकि इससे पहले अवज्ञा कर चुका है और तू तो फसादियों में से था। बस आज हम तेरे बदन को बचा लेंगे ताकि तु आने वाली (पीढ़ियों) के लिए (नमूना) और सीख का कारण बन जाये और इसमें कोई सन्देह नहीं बहुतेरे लोग हमारी निशानियों से अनभिज्ञ हैं।"

हमारा विचार है कि उपरोक्त आयत की चमत्कारिता और ऐजाज़नुमाई पर हमें कोई टीका टिप्पणी करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि इन आयतों की चमत्कारिता सूरज से ज्यादा दीप्तिमान है। अन्तिम अंश पर एक बार फिर ध्यान दें। "बहुतेरे इंसान हमारी आयतों से अनभिज्ञ हैं।" 1400 साल पहले भी यही परिस्थिति थी और हज़ारों निशानियाँ सामने आ जाने के बाद भी यही परिस्थिति है कि हम अपने पालने वाले की निशानियों से अनभिज्ञ हैं।

कुरआने हकीम के कुछ चमत्कार प्रस्तुत करने का यह एक बहुत छोटा सा प्रयास है। "हक तो यह है कि हक़ अदा न हुआ" बहरहाल अब समय आ गया है कि इस दृष्टिकोण से कुरआन का वैचारिक अध्ययन किया जाये और "जिसने पहुंचाया ———"के निर्देशानुसार इसकी चमत्कारिता और वाकपटुता को अन्य जाति के सामने प्रस्तुत किया जाये ताकि इसको ईश्वरीय वाक् मानने का थोड़ा हक़ अदा हो सके। मुखरित कुरआन यानी परहेज़गारों और संयमयों के सरदार हज़रत अली अ0 ने नहजुलबलाग़ा के एक व्याख्यान में कुरआन के 42 गुण गिनाये हैं। हम उन में से निम्नलिखित के बयान पर अपने इस निबन्ध को असफलता की अनुभूति के साथ समाप्त करते हैं। हज़रत फरमाते हैं कि "यह कुरआन वह समन्दर है जिसकी गहराई का अन्दाज़ा नहीं किया जा सकता, वह किरण है जिसकी चमक कभी मन्द नहीं पड़ेगी। यह कुरआन धर्मज्ञानियों की प्यास बुझाने की सरिता और धर्मविधिवेत्ताओं के मनों पर बहार है।"

gkf'k;s&

1—सूरा 41, आयत 53 2—सूरा 15, आयत 47
3—सूरा 21, आयत 30 4—सूरा 15, आयत 21
5—सूरा 21 आयत 32 6—सूरा 36, आयत 36

●●●

¼ist ua0 6 dk 'ks"k½

कुछ गिनती इस तरह तय (निश्चित) कर ली कि रमज़ान महीना 30 दिन, शव्वाल 29 दिन, ज़ीक़ाद 30 दिन, जिल्हिज्जा 29 दिन।

इसी तरह एक महीना 30 का और एक महीना 29 का । ये लोग " अस्हाबुल अ़दद" (अंक वाले) कहे जाते हैं। दूसरे ओलेमा और देखने के मुताबिक़ दसूरी क़िस्म की हदीसों पर चले। ये लोग "अस्हाबुर्रुया" (देखने वाले यानी देखने के पक्षधर) कहे गए। तीसरी चौथी सदी हिजरी तक ये फ़र्क़ बहुत ज़ोरों पर था और आपस में एक दूसरे की ख़िलाफ़ रेसाले भी लिखे गये लेहाज़ा बहुत से रेसाले इस टॉपिक पर मैं हमारी जानकारी में मौजूद हैं। मगर बाद में ये मतभेद मिट गया और तमाम उलमा—ए—शीया इस बात के क़ायल (मानने वाले) नज़र आने लगे कि गिनती का कोई भरोसा नहीं। अस्ल भरोसा चाँद का है। यही अब भी सभी फ़िरकों के नज़रिए से सही हैसियत रखता है। इतना तो यक़ीन कर लिया गया है कि पहली क़िस्म की हदीसों पर चला नहीं जा सकता मगर आज तक उन हदीसों का दिल में बैठ पाने वाला मतलब समझ में नहीं आया।

●●●

d jjv kusgdle

vYylekuTe vlQUhh

बे अमल मुस्लिम ये ग़फ़लत, मारिफ़त का खून है
कुछ ख़बर भी है कि कुरआं, ज़ीस्त का क़ानून है।
ये जबीने अक़्ल पर है, इल्म की ताबिन्दगी
इसके हर इक लफ़्ज़ में है जिन्दगी ही ज़िन्दगी
इसकी क़िरअत से है रौशन, आलमे कुन की फ़ज़ा
इसने पैदा की है पाकीज़ा तमद्दुन की फ़ज़ा
हो गयी कुछ और ही वक़अत, फ़ने तज्वीद की
''रत्तलिल क़ुर्आन तरतीला'' ने जब ताईद की
नूर की लहरों से, ज़ेहने आदमीयत धुल गया
हुक्मे 'इक़रअ्' आते ही ये बाबे हिकमत खुल गया
गुल न होगा जो कभी ऐसा चिराग़े तूर है
नस्ले आदम के लिए ये आख़िरी दस्तूर है
जाद–ए–अख़लाक़ में तदबीरे मन्ज़िल है यही
ख़ल्क़ में इन्सानियत का दर्से कामिल है यही
है हर इक मौज़ूअ़ पर इफ़्हाम भी तफ़्हीम भी
ज़िक्रे हक़ भी और हक़्क़ुन्नास की तालीम भी
सीधे–सीधे चन्द लफ़्ज़ों में कुछ ऐसा कह गया
फ़लसफ़ा कुरआन का मुंह देखता ही रह गया
दिल जलों ने फ़र्क़ समझा आग में और धूप में
''इश्तिराकीयत'' दिखाई इसने अस्ली रूप में
ये मुकम्मल दर्स है इन्सां बनाने के लिए
इक निसाबे ज़िन्दगी है हर ज़माने के लिए
क्यों न ''ला यख़्लू अनिल हिकमत'', हो कुरआने हकीम
अम्ने आलमगीर है, मक़्सूदे कुरआने हकीम
इसके सर सेहरा है 'बिस्मिल्लाह' की तन्सीब का
इसके सर पर ताज है, इस्लाम की तहज़ीब का
तुझको 'बाबुलइल्म' से, हासिल है फ़ख़्रे इन्तेसाब
रू–ए–मअ़ना से उलट, ऐ दोस्त लफ़्ज़ों की नक़ाब
पूछ हर मालूमो ना मालूम, 'बाबे इल्म' से
आयतें कुरआँ से ले, मफ़्हूम 'बाबे इल्म' से
नश्र कर अपने अमल से, शरअ़ के पैग़ाम का
है अगर मुस्लिम, नमूना बन के रह, इस्लाम का!

●●●

engsbelesgl u^{v0}

elsgrjekrut ke tejkdult +vdcjijh

जो शख़्स जितना है हसने मुजतबा से दूर
उतना ही वो रहेगा रसूले खुदा से दूर
हम हैं ग़रीक़े बहरे करम रह के नाव पर
मुर्दा हैं जो हैं कश्ती से और नाखुदा से दूर
इस अहदे बेख़ुलूस के आलम अजीब हैं
दौलत से लौ लगाये हैं, पर हैं खुदा से दूर
आंखें हैं ठीक, कज नज़री के शिकार हैं
रखते हैं कान फिर भी हैं सम्ए सदा से दूर
वो उस क़दर क़रीब जहन्नम से हो गया
जो जिस क़दर हुआ पिसरे फ़ातिमा से दूर
कैसे दरे हसन से उठे सर कनीज़ का
माही खुशी से कैसे हो आबे बक़ा से दूर

●●●

ख़बर नामा

इराक़ में तशद्दुद की कारवाई में 14 अफराद हलाक

ऐसे में जब इराक़ी गुज़िश्ता माह होने वाले पार्लिमानी चुनाव के परिणाम का इन्तिज़ार कर कर हे हैं, बग़दाद और उसके आस पास में होने वाले हमलों में कम अज़ कम 14 अफराद हलाक हुए। पुलिस का कहना है कि इतवार को दो मार्केटों में होने वाले बम हमले हलाकतख़ेज़ साबित हुए। इस धमाके में ख़रीददार हलाक व ज़ख़्मी हुए।

अक़वामे मुत्तहिदा का कहना है कि एक बरस के दौरान सुन्नी अक्सरीयत और शिया अक़लीयत के दरमियान होने वाली इस शिद्दत पसन्दी के बाईस 12000 से अधिक इराक़ी हलाक हो चुके हैं। मुताद्दिद लोग मुल्क में सिक्योरिटी को तक़वीयत देने में नाकामी का ज़िम्मेदार वज़ीरे आज़म नूरी अल–मालिकी की हुकूमत को देते हैं।



फ़िलस्तीनी बच्चों की क़ैदे तन्हाई के वाक़्यात में इज़ाफ़ा

बच्चों की आलमी तन्ज़ीम "दिफ़ा बराये बच्चेगान" ने कहा है कि पिछले दो साल के दौरान इस्राईली जेलों में क़ैद फिलस्तीनी बच्चों को क़ैदे तन्हाई में रखे जाने के वाक़्यात में इज़ाफ़ा देखने में आया है। बच्चों के हुक़ूक़ के लिए काम करने वाली तन्ज़ीम की रिपोर्ट में बताया गया है कि इस्राईल की जानिब से बच्चों को क़ैदे तन्हाई में रखने का मक़सद उनसे पूछताक्ष करना और उनसे ग़लत बयान लेना या दूसरों से मुताल्लिक़ जानकारी निकलवाना है। रिपोर्ट में बताया गया कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर यह बात साबित है कि जिन बच्चों को जुर्म की सज़ा के तौर पर क़ैदे तन्हाई में रखा जाता है उसका मक़सद उन्हें बालिग़ क़ैदियों से अलग रखना होता है जबकि इस्राईल इस क़ैद को उन मक़ासिद के लिए बिल्कुल इस्तेमाल नहीं करता है। दिफ़ा बराये बच्चेगान का कहना था कि साल 2013 में इस्राईली जेलों में क़ैद फ़िलस्तीनी बच्चों में से 214 फ़ीसद बच्चों को इस्राईली फ़ौज ने पूछताछ के लिए क़ैदे तन्हाई में रखा था।

इस्राईली फ़ौज के अचानक घर में घुसने से बूढ़ा फ़िलस्तीनी शहीद

फ़िलस्तीन के मक़बूज़ा मग़रिबी किनारे के तारीख़ी शहर अल–ख़लील में इस्राईली फ़ौज अचानक एक फिलस्तीनी शहरी के घर में घुस गई जिसके नतीजे में एक 70 वर्षीय बूढ़े फिलस्तीनी का हार्टअटैक हो गया। मरकज़े इत्तिलाआते फ़िलस्तीन के मुताबिक़ इस्राईली फ़ौजियों की बड़ी तादाद ने अल–ख़लील शहर में वादियुल हरिया के मक़ाम पर एक घर की दीवारें फांद कर अन्दर दाख़िल होने की बाद घर की तलाशी का सिलसिला शुरू किया। घर में बूढ़े फिलस्तीनी मोहम्मद अबदुस्सलाम के अलावा औरतें और बच्चे भी मौजूद काबिज़ फ़ौजियों के इस तरह अचानक घर में घुस आने से बूढ़े फिलस्तीनी को अचानक हार्ट अटैक हुआ और उसने फ़ौरन दम तोड़ दिया। उसके एक अज़ीज़ ने मरकज़े इत्तिलाआते फ़िलस्तीन के नामानिगार को बताया कि सहयूनी फ़ौजी शहीद अबदुस्सलाम के भतीजे माज़िन को गिरफ़्तार करने के लिए यह लोग घर में घुसे थे। माज़िन घर में नहीं था लेकिन क़ाबिज़ फ़ौजियों ने उसके वालिद के साथ तू–तकार शुरू कर दी जिस पर अबदुस्सलाम को अचानक दिल का दौरा पड़ा और इन्तिक़ाल फ़रमा गये।

क़िब्ला-ए-अव्वल से मिली हुई रबातुल कुर्द को यहूदी मुक़द्दस मक़ाम में बदलने की साज़िश

इस्राईली हुकूमत की जानिब से मस्जिदे अक़्सा से मिली हुई तारीख़ी ईमारतों और वक़्फ़ मिल्कियतों को यहूदी मज़हबी मराकिज़ में बदलने के लिए मुसलसल कोशिश जारी है। इसी तरह की एक नई साज़िश यह सामने आई है कि इस्राईली हुकूमत ने मस्जिदे अक़्सा के मग़रिबी दीवार से मिली हुई तारीख़ी इमारत रबातुल कुर्द को यहूदी मज़हबी मरकज़ और मुक़द्दस मक़ाम में बदलने की साज़िशे शुरू कर दी हैं। मरकज़े इत्तिलाते फ़िलस्तीन के मुताबिक़ रबातुल कुर्द वह तारीख़ी मक़ाम है जिसे सन् 1294 ई0 में सुल्तान नासिर मोहम्मद बिन क़लाऊन के दौरे हुकूमत में दयारे मिस्र के गवर्नर ने मस्जिदे अक़्सा के लिए वक़्फ़ किया था। वक़्फ़ से क़ब्ल मिस्री हुक्मरान इसे गर्मियों के मौसम में अपनी रिहाईशगाह के तौर पर इस्तिमाल करते थे। शुरू में यह एक मंज़िला इमारत थी जिसे मस्जिदे अक़्सा के ज़ायरीन और फ़क़ीरों के लिए ठिकाने के तौर पर इस्तिमाल किया जाता रहा उसके बाद उसके सामने एक दूसरी मंज़िल भी तामीर की गई और ख़िलाफ़ते उस्मानियां के दौर में तीसरी मंज़िल भी बनाई गयी थी जिसे उसके बाद दीनी यूनिवर्सिटी के लिए इस्तिमाल किया जाता था। मस्जिदे अक़्सा पर इस्राईली क़ब्ज़े के बाद यहाँ से वह यूनिवर्सिटी ख़त्म कर दी गयी। यह जगह अब भी क़िब्ल–ए–अव्वल का वक़्फ़शुदा हिस्सा समझी जाती है। इस्राईली कीस्ट की दाख़िला कमेटी अरसे से मस्जिदे अक़्सा से मिली हुई इमारत को यहूदी इबादतगाहों और सहयूनी मुक़द्दस मक़ामात में बदलने की साज़िशों में मसरूफ़ रही है। इन्हीं साज़िशों में रबातुलकुर्द को छोटी दीवार गिरया क़रार दे कर उसे यहूदियों के लिए मज़हबी रस्मों की अदायगी के लिए मख़सूस करने की साज़िश की जा रही है। इधर मस्जिदे अक़्सा की तामीर व मरम्मत की ज़िम्मेदार तंज़ीम अल–अक़्सा फ़ाउण्डेशन की जानिब से जारी एक बयान में रबातुलकुर्द को क़िब्ल–ए–अव्वल से अलग करके यहूदी इबादतगाह में तब्दील करने की सहयूनी साज़िश की सख़्त मज़म्मत की है। बयान में कहा गया है कि रबातुलकुर्द ख़ालिस इस्लामिक अवकाफ़ में से एक ऐसा वक़्फ़ है जो पिछले 800 साल से क़िब्ल–ए–अव्वल का हिस्सा रहा है।

1967ई. की 6 दिवसीय सहयूनी दहशतगर्दी के 47 साल मुकम्मल

5 जून 1967 ई0 को इस्राईल की अरब मुमालिक और फ़िलस्तीन पर 6 दिवसीय आंतकी हमले को 47 साल पूरे हो गये हैं। इस जंग में सहयूनी फ़ौज ने जिस आतंक एवं अत्याचार का प्रदर्शन किया उसने पिछले ज़माने की जंगों में तबाही व बर्बादी को भी भुला दिया था। जंग में सहयूनी फ़ौज ने फ़िलस्तीन के दरिया–ए–उरदंग के मग़रिबी किनारे ग़ाज़ा की पट्टी मक़बूज़ा बैतुल मुक़द्दस, शाम की वादी गोलान और मिस्र के जज़ीरे पर क़ब्ज़ा कर लिया था। 5 जून से 10 जून तक जारी रहने वाली 6 दिवसीय जंग के असर आज भी बाक़ी हैं और सहयूनी फ़ौन अपनी हठधर्मी पर बाक़ी है। क़ाबिज़ फ़ौज ने जज़ीरे का कुछ हिस्सा ख़ाली करने के बाद 9 साल क़ब्ल ग़ाज़ा की पट्टी से भी फ़ौजें वापस बुला ली थीं। अब तक मग़रिबी किनारे बैतुल मुक़द्दस और वादिये गुलान पर अब भी इस्राईल का आतंक जारी है। 1967 की 6 दिवसीय अरब–इस्राईल जंग 1948 ई0 में सहयूनी रियासत के क़याम के बाद अरब मुल्क के ख़िलाफ़ इस्राईल की तीसरी जंग थी। इस जंग में अरब और फ़िलस्तीनियों का जानी व माली नुक़सान इस्राईल के मुकाबले में कही ज़्यादा था।